REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 9 | JUNE - 2022

अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में आदर्शवाद और यथार्थवाद

दुर्गा प्रसाद सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,राजनीति विज्ञान विभाग,
महामाया गवर्नमेंट डिग्री कालेज श्रावस्ती (उ0प्र0)

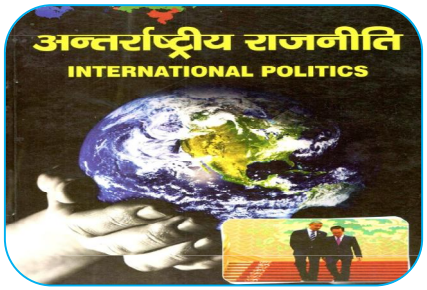

अन्तरराष्ट्रीय राजनीति राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों का विश्लेषण करती है। अन्तरराष्ट्रीय राजनीति विकास की वह अवस्था थी जब अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों में समकालीन घटनाओं और समस्याओं के अध्ययन का महत्त्व समझा जाने लगा। अन्तरराष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन वास्तव में विदेश नीतियों के अध्ययन के अतिरिक्त कुछ नहीं है (The study of International Politics is identical to the study of foreigner policy)[1]

यद्यपि विदेश नीति का अध्ययन अन्तरराष्ट्रीय राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष जरूर है लेकिन इसे अन्तरराष्ट्रीय राजनीति का पर्याय नहीं माना जा सकता है।

अन्तरराष्ट्रीय राजनति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विभिन्न राष्ट्र अपने–अपने हितों की रक्षा करने का प्रयत्न करते है और यह कार्य राष्ट्रों की विदेश नीति के माध्यम से ही होता है लेकिन विषय क्षेत्र की दृष्टि से विदेश नीति अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के अधीन है। अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में मार्गेथ्यू का विचार है कि इसमें राष्ट्रों के राजनीतिक सम्बन्धों और विश्व शांति की समस्याओं को केन्द्र बिन्दु मानकर उनका विश्लेषण किया जाता है तथा राष्ट्रों के बीच निरन्तर होने वाले शक्ति संघर्ष के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

(Struggle for and use of power among Nations)

अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में किसी भी देश का कोई स्थायी मित्र नहीं है केवल स्थाई है तो उसके स्वार्थ और हित क्योंकि देश की सरकारें बदल जाने पर भी राष्ट्रों की विदेश नीति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता है।

इसे भारत के संदर्भ में देखते है –

जैसे नेहरू जी के काल में गुट निरपेक्ष की नीति, पचंशील सिद्धान्त इत्यादि आदर्शवादी सिद्धान्त थे। जिसमें समाजवाद और विश्व शान्ति प्रमुख था।

उसके बाद इन्दिरा गाँधी जी के काल में मूल व्यवस्था समाजवादी ही बनी रही। बस अन्तर इतना कि इसमें आदर्शवाद के जगह पर व्यवहारवाद पर विचार केन्द्रित हो गया।

गुजराल जी के कार्यकाल में भी विदेश नीति का मूल केन्द्र बिन्दु नव समाजवाद ही बना रहा। यदि वर्तमान संदर्भ में विश्लेषण किया जाए तो पूँजी प्रधान व्यवस्था में भारत की विदेश नीति का केन्द्र बिन्दु पूँजी प्रधान होने के साथ पंचशील और गुटनिरपेश ही बना रहा है। (पंचशील और गुटनिरपेक्ष के लक्षण कोरोना महामारी काल में उभरकर आया।)

इसके साथ–साथ भारत ने अपनी परमाणु नीति में परिवर्तन किया है जो यह दर्शाता है कि अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में भारत की विदेश नीति सुदृढ़ होने के साथ–साथ परिवर्तन शील भी है जो एक प्राकृतिक प्रक्रिया है।

अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के लिए दो दृष्टिकोण है। (1) आदर्शवाद (Idealism) (2) यथार्थवाद (Realism) आदर्शवाद दृष्टिकोण यथार्थवादी दृष्टिकोण से बिल्कुल भिन्न है। आदर्शवाद का सारा पक्ष अन्तर राष्ट्रीय समाज में विकासात्मक प्रगति होने के विचार पर आधारित है। यह विचार 18वीं शताब्दी में आया। अमेरिका और फ्रांसीसी क्रान्तियों की प्रेरणा आदर्शवाद ही था। जैसे स्वतन्त्रता और समता की अवधारणा।

कान्डरसेट ने 1790–95 में एक कल्पना प्रस्तुत की जिसमें वह एक ऐसी विश्व व्यवस्था की बात करते है जहाँ कोई युद्ध नहीं कोई अत्याचार नहीं, कोई विषमता नहीं। पूरे विश्व में न्याय व्यवस्था और पूर्ण शांति है।

आदर्शवाद अन्तरराष्ट्रीय समाज का एक ऐसा चित्र प्रस्तुत करता है जो शक्ति राजनीति, अनैतिकता और हिंसा से मुक्त हो।

आदर्शवादी दृष्टिकोण इस बात का समर्यक है कि शिक्षा और अन्तरराष्टीय संगठन की सहायता से विश्व को शान्तिमय रखा जा सकता है।

आदर्शवादी दृष्टिकोण अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के लिए कुछ सिद्धान्त बताता है।

जैसे = राष्ट्रों को अपने पारस्परिक व्यवहार में नैतिक सिद्धान्तों पर चलना चाहिए। उनके व्यवहार में शक्ति की राजनीति के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए ..... इस बात को भारत के संविधान में 'राज्य के नीति निदेशक तत्त्व– में Art. 51 में Mention किया गया है।

= विश्व सरकार की स्थापना करके शक्ति की राजनीति को समाप्त कर देना चाहिए।

= राज्य के ऐसे राजनीतिक दलों को भंग कर देना चाहिए जो तानाशाही सिद्धान्तों में विश्वास रखते हो।

आदर्शवाद यूटोपिया की बात करता है जबकि यथार्थवाद व्यवहारिकता या प्रांसगिकता की बात करता है।

यथार्थवाद की बुनियादी मान्यता यह कि राष्ट्रों के बीच विरोध एवं संघर्ष किसी न किसी रूप में बने रहते है क्योकि प्रत्येक देश के अपने–अपने हित है चूंकि हितों में अन्तर होने का कारण प्राकृतिक है प्रकृति ने भी स्वयं को हर जगह समान नहीं बनाया है कहीं नस्ल को लेकर भिन्नता तो कहीं खनिज संसाधन को लेकर भिन्नता, कहीं भूमि की उपजाऊ पन को लेकर भिन्नता तो कहीं वातावरण और जलवायु को लेकर भिन्नता है, तो कहीं मानव द्वारा बनायी व्यवस्था को लेकर भिन्नता।

इसी भिन्नता के कारण सभी राष्ट्रों के हित में अन्तर है।

इसी भिन्नता के कारण अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति या प्रभाव के लिए निरन्तर प्रयत्न होते रहते है और कोई अन्तराष्ट्रीय कानून या संगठन इसे हमेशा के लिए रोक नहीं सकता।

इसे अगर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यूक्रेन–रूस के मध्य युद्ध स्वार्थ और हित के लिए था। जिसे किसी अन्तरराष्ट्रीय संगठन या कानून ने रोक नहीं पाया। जब रूस के हित सधने लगा तो युद्ध की भयावहता धीरे–धीरे कम होने लगी।

अद्यपि अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में स्वहित सर्वप्रमुख तत्त्व होता है।

यथार्थवाद शक्ति संघर्ष में आगे रहने को अपना उद्देश्य मानता है और उसके लिए किसी भी साधन के प्रयोग करने में वह नैतिकता या अनैतिकता का प्रश्न नहीं उठाना चाहता है जैसे द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका परमाणु बम का प्रयोग करते समय नैतिकता या अनैतिकता के प्रश्न पर विचार ही नहीं किया। बल्कि उसने परिणाम सापेक्ष नीतियों को केन्द्र बिन्दु मानकर अपने तात्कालिक हित को साधा। यथार्थवादियों में भी कई दृष्टिकोण है। उनमें इस बात पर भिन्न है कि राष्ट्रीयहित को कहाँ तक प्रधानता दी जाये। लेकिन इस बात पर मतैक्यता है कि किसी भी देश की विदेश नीति और अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों का आधार राष्ट्रीय हित पर होना चाहिए न कि नैतिक सिद्धान्तों के आधार पर।

यथार्थवादियों की मत भिन्नता[5] 'जार्ज कैनन' और 'मार्गेथ्यू' के विचारों में मिलती है। कैनन का कहना है कि हम केवल अपने हितों को समझ सकते है इसलिए हमें अपनी विदेश नीति अपनी राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुसार बनानी चाहिए और क्रियान्वित करनी चाहिए।

कैनन यह भी मानते है कि जहाँ तक हो सकें, हमें उन नैतिक सिद्धान्तों के अनुसार भी कार्य करना चाहिए जो हमारी सभ्यता की भावना में निहित है इसलिए इन नैतिक सिद्धान्तों को किसी दूसरे राष्ट्र पर नहीं थोपना चाहिए।

जबकि मार्गेथ्यू का विचार है कि सारा जोर राष्ट्रीय हित और शक्ति के सर्वोपरि होने पर है। उनका यह दृढ़ विचार है कि राष्ट्रीय जरूरत के सामने किसी भी नैतिक सिद्धान्त का कोई महत्त्व नहीं है।

प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के बीच के काल में यथार्थवाद और आदर्शवाद के बीच विवाद खुलकर सामने आया। यह धारणा जोर पकड़ती गयी कि यथार्थवाद पर बनी नीतियाँ राष्ट्रवादी और आदर्शवाद पर बनी

नीतियाँ आदर्शवादी होती है। यहाँ तक माना जाने लगा कि यथार्थवादियों की नीतियाँ शान्ति विरोधी है और दुनिया में शान्ति का पक्ष प्रबल करने के लिए आदर्शवाद पर चलना जरूरी है।

यथार्थवादियों के आदर्श का चिन्तन वैज्ञानिक आधार पर किया जा सकता है और आदर्शवादियों के नैतिकता के आदर्श का आधार दार्शनिक हो सकता है।

निष्कर्ष –

राष्ट्रीयहित के अनुरूप सफलतापूर्वक कार्य करना राजनीतिक समझदारी है। यदि कोई राष्ट्र ऐसी कार्य प्रणाली अपनाता है जिसमें आदर्शवाद और यथार्थवाद दोनों सिद्ध हो जाये तो वह व्यवस्था नैतिक और प्रासंगिक दोनों है। वर्तमान समय विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है जिसमें दुनिया बहुत छोटी हो गयी है, जिसके कारण राष्ट्रों में पारस्परिक सहयोग बढ़ गया है और युद्ध के परिवर्तित स्वरूप ने सभी राष्ट्रों को शान्ति का एहसास करा दिया है।

शान्ति की ओर राष्ट्रों का जो रूख बदला है उसे आदर्शवाद की ही उपलब्धि मानी जायेगी। इसके साथ–साथ अणु बम के विकास से 'नाभकीय भयादोहन' का सिद्धान्त पूर्ण रूप से प्रासंगिक हो गया है जो राष्ट्रों के मध्य युद्ध को अधिकतम रूप से रोकने का कार्य करता है जो कहीं न कहीं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आदर्शवाद को समर्थन कर रहा है। लगता है कि आदर्शवाद और यथार्थवाद का मतभेद भविष्य में उतना गम्भीर नहीं रहेगा, जितना सदा से रहा है।

संदर्भ सूची

1. हेंस जे0 मारगेन्थाऊ, पॉलिटिक्स अमंग नेशंज, कलकत्ता, 1972
2. अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त एवं व्यवहार (पंत एवं जैन) जे0एन0यू0 नई दिल्ली। पृष्ठ–3, ग्यारहवां संस्करण संशोधित।
3. अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त एवं व्यवहार (पंत एवं जैन) जे0एन0यू0 नई दिल्ली, ग्यारहवॉ संस्करण पृष्ठ 399, 403, 407
4. भारत का संविधान एक परिचय बसु दास दुर्गा, 10वॉ संस्करण। पृष्ठ संख्या 161
5. जॉन मॉर्टन ब्लम, बुडरो विल्सन एण्ड द पॉलिटिक्स ऑफ मोरेलिटी (1956), प0पी0 10, 197–99